सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि, सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्खु सोतापत्तिफले पतिट्ठहि। "तदा उब्बरी पुराणदुतियिका अहोसि, अस्सकराजा उक्कण्ठितो भिक्खु, माणवो सारिपुत्तो, तापसो पन अहमेव अहोसि"न्ति।

अस्सकजातकं

●

८. सुंसुमारजातकं

अलं मेतेहि अम्बेहीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो देवदत्तस्स वधाय परिसक्कनं आरब्भ कथेसि।

पच्चुप्पन्नवत्थु

तदा हि सत्था "देवदत्तो वधाय परिसक्कती"ति सुत्वा "न, भिक्खवे, इदानेव देवदत्तो मय्हं वधाय परिसक्कति, पुब्बेपि परिसक्किकयेव, सन्तासमत्तम्पि पन कातुं न सक्खी"ति वत्वा अतीतं आहरि।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते हिमवन्तपदेसे बोधिसत्तो कपियोनियं निब्बत्तित्वा नागबलो थामसम्पन्नो महासरीरो हुत्वा गङ्गानिवत्तने अरञ्ञायतने वासं कप्पेसि। तदा गङ्गाय एको सुसुमारो वसि। अथस्स भरिया बोधिसत्तस्स सरीरं दिस्वा तस्स हदयमंसे दोहळं उप्पादेत्वा सुसुमारं आह—"अहं सामि, एतस्स कपिराजस्स हदयमंसं खादितुकामा"ति। "येन केनचि उपायेन गण्ह, सचे न लभिस्सामि, मरिस्सामी"ति। "तेन हि मा सोचि, अत्थेको उपायो, खादापेस्सामि तं तस्स हदयमंस"न्ति सुसुमारिं समस्सासेत्वा बोधिसत्तस्स गङ्गाय

शास्ता ने यह धर्मदेशना कह सत्यों को प्रकाशित कर जातक का परिणाम संघटित किया। सत्यों के अन्त में उत्कण्ठित (भिक्षु) स्रोतापत्ति फल में प्रतिष्ठित हुआ।

उस समय उब्बरी पूर्व-भार्या थी। अस्सक राजा उत्कण्ठित भिक्षु था। माणवक सारिपुत्र। तपस्वी तो मैं ही था।

अस्सक जातक

●

२०८. सुंसुमार जातक

"अलमेतेहि अम्बेहीति-....." यह (गाथा) शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय देवदत्त द्वारा वध-हेतु किये गये प्रयत्न के बारे में कही।

क. वर्तमान कथा

उस समय शास्ता ने यह सुन कि देवदत्त वध के लिए प्रयत्न करता है, कहा-भिक्षुओं, न केवल इस समय मेरा वध करने का प्रयत्न करता है, उसने पहले भी किया है; लेकिन त्रास मात्र भी न उत्पन्न कर सका।

इतना कह पूर्व-जन्म की कथा कही।

ख. अतीत कथा

पूर्व काल में वाराणसी-नृप ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधिसत्व हिमालय प्रदेश में बन्दर योनि प्राप्त की। वह हाथी सदृश बलवाले, शक्ति-सम्पन्न, महान् शरीरधारी, सुन्दर थे। गंगा के मोड़ पर जंगल में रहते थे।

उस समय गंगा में एक मगरमच्छ रहता था। उसकी भार्या ने बोधिसत्व को देखा। उसके मन में उसका मांस खाने का दोहद उत्पन्न हुआ। उसने मगरमच्छ से कहा-स्वामी! इस कपिराज का हृदय-मांस खाना चाहती हुँ। "भद्रे! हम जल-चर, वह स्थल-चर; क्या हम उसे पकड़ सकेंगे?" "जिस किसी भी प्रकार हो पकड़, यदि नहीं मिलेगा तो मर जाऊँगी।" "तो चिन्ता मत कर। एक उपाय है। मैं तुम्हे उसका हृदय-मांस खिलाऊँगा।"

पानीयं पिवित्वा गङ्गातीरे निसिन्नकाले सन्तिकं गन्त्वा एवमाह—"वानरिन्द, इमस्मिं पदेसे कसायफलानि खादन्तो किं त्वं निविट्ठट्ठानेयेव चरसि, पारगङ्गाय अम्बलबुजादीनं मधुरफलानं अन्तो नत्थि, किं ते तत्थ गन्त्वा फलाफलं खादितुं न वट्टती"ति ? "कुम्भीलराज, गङ्गा महोदका वित्थिण्णा, कथं तत्थ गमिस्सामी"ति ? "सचे इच्छसि, अहं त्वं मम पिट्ठिं आरोपेत्वा नेस्सामी"ति। सो सद्दहित्वा "साधू"ति सम्पटिच्छि। "तेन हि एहि पिट्ठिं मे अभिरूहा"ति च वुत्ते तं अभिरुहि। सुंसुमारो थोकं नेत्वा उदके ओसीदापेसि।

बोधिसत्तो "सम्म, उदके मं ओसीदापेसि, किं नु खो एत"न्ति आह। "नाहं तं धम्मसुधम्मताय गहेत्वा गच्छामि, भरियाय पन मे तव हदयमंसे दोहळो उप्पन्नो, तमहं तव हदयं खादापेतुकामो"ति। "सम्म, कथेन्तेन ते सुन्दरं कतं। सचे हि अम्हाकं उदरे हदयं भवेय्य, साखग्गेसु चरन्तानं चुण्णविचुण्णं भवेय्या"ति। "कहं पन तुम्हे ठपेथा"ति ? बोधिसत्तो अविदूरे एकं उदुम्बरं पक्कफलपिण्डिसञ्छन्नं दस्सेन्तो "पस्सेतानि अम्हाकं हदयानि एतस्मिं उदुम्बरे ओलम्बन्ती"ति आह। "सचे मे हदयं दस्ससि, अहं तं न मारेस्सामी"ति। "तेन हि मं एत्थ नेहि, अहं ते रुक्खे ओलम्बन्तं दस्सामी"ति। सो तं आदाय तत्थ अगमासि। बोधिसत्तो तस्स पिट्ठितो उप्पतित्वा उदुम्बररुक्खे निसीदित्वा "सम्म, बाल सुंसुमार, 'इमेसं सत्तानं हदयं नाम रुक्खग्गे होती'ति सञ्ञी अहोसि, बालोसि, अहं तं वञ्चेसिं, तव फलाफलं तवेव होतु, सरीरमेव पन ते महन्तं पञ्ञा पन नत्थी"ति वत्वा इममत्थं पकासेन्तो इमा गाथा अवोच—

उसे आश्वासन दे मगरमच्छ, जिस समय बोधिसत्व गंगा का पानी पी गंगा-तट पर बैठा था, बोधिसत्व के पास जाकर बोला—बानरराज! यहाँ इन अस्वादिष्ट फलों को खाते हुए तुम अभ्यस्त स्थान में ही विचरते हो? गंगा-पार आम, कटहल के मधुर फलों की सीमा नहीं (अधिकता है)। क्या गंगा-पार जाकर फल-मूल नहीं खाने चाहिए? "मगरराज! गंगा में पानी बहुत है। वह विस्तृत है। मैं उधर कैसे जाऊँ?" "यदि चलें तो मैं तुम्हे अपनी पीठ पर चढ़ा कर ले जाऊँगा।" उसने उसका विश्वास कर 'अच्छा' कह स्वीकार किया। 'तो आ मेरी पीठ पर चढ़' कहने पर (वानरराज) चढ़ गया। मगरमच्छ थोड़ी दूर जा, उसे डुबाने लगा।

बोधिसत्व ने पूछा—मित्र! यह क्या? मुझे पानी में डुबा रहा है? "मैं तुम्हे धर्म-भाव से नहीं ले जा रहा हूँ। मेरी भार्या के मन में तुम्हारे हृदय-मांस के लिए दोहद उत्पन्न हुआ है। मैं उसे तुम्हारा हृदय-मांस खिलाना चाहता हूँ।" "दोस्त! तुमने कह दिया, अच्छा किया। यदि हमारे पेट में हृदय हो तो एक शाखा से दूसरी शाखा पर मेरे घूमते हुए चूर्ण-विचूर्ण हो जाय।"

"तो तुम कहाँ रखते हो?" बोधिसत्व ने पास ही पके फलों से लदा हुआ एक गूलर का पेड़ दिखाकर कहा—देख, हमारे हृदय इस गूलर के पेड़ पर लटकते हैं।

"यदि मुझे हृदय दे, तो मैं तुम्हे नहीं मारूँगा।" "तो आ मुझे वहाँ ले चल। मैं तुम्हे वृक्ष पर लटका हुआ हृदय दूँगा।"

वह उसे लेकर वहाँ गया। बोधिसत्व ने उसकी पीठ पर से छलाँग मार गूलर की शाखा पर बैठ गया और कहा—सौम्य! मूर्ख मगरमच्छ! तुमने यह मान लिया कि इन प्राणियों का हृदय वृक्ष की शाखाओं पर होता है। तुम मूर्ख हो। मैंने तुमको ठगा है। तुम्हारे फल-मूल तुम्हारे ही पास रहें। तुम्हारा शरीर ही बड़ा है। बुद्धि नहीं है। यह कह, इसी बात को स्पष्ट करते हुए गाथाएँ कहीं—

“अलं मेतेहि अम्बेहि, जम्बूहि पनसेहि च। यानि पारं समुद्दस्स, वरं मय्हं उदुम्बरो।।

“महती वत ते बोन्दि, न च पञ्ञा तदूपिका। सुंसुमार वञ्चितो मेसि, गच्छ दानि यथासुख”न्ति।।

तत्थ अलं मेतेहीति यानि तया दीपके निद्दिट्ठानि, एतेहि मय्हं अलं। **वरं मय्हं उदुम्बरोति** मय्हं अयमेव उदुम्बररुक्खो वरं। **बोन्दीति** सरीरं। पञ्ञापनते तदूपिका तस्स सरीरस्स अनुच्छविका नत्थि। गच्छ दानि यथासुखन्ति इदानि यथासुखं गच्छ नत्थि ते हदयमंसगहणूपायोति अत्थो। सुंसुमारो सहस्सं पराजितो विय दुक्खी दुम्मनो पज्झायन्तोव अत्तनो निवासट्ठानमेव गतो।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि—“तदा सुंसुमारो देवदत्तो अहोसि, सुंसुमारी चिञ्चमाणविका, कपिराजा पन अहमेव अहोसि”न्ति।

सुंसुमार जातकं

●

९. कुक्कुटजातकं

दिट्ठा मया वने रुक्खाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो धम्मसेनापतिसारिपुत्तत्थेरस्स सद्धिविहारिकं दहरभिक्खुं आरब्भ कथेसि।

पच्चुप्पन्नवत्थु

सो किर अत्तनो सरीरस्स गुत्तिकम्मे छेको अहोसि। “सरीरस्स मे न सुखं भवेय्या”ति भयेन अतिसीतं अच्चुण्हं परिभोगं न करोति, “सीतुण्हेहि सरीरं किलमेय्या”ति भयेन बहि न निक्खमति, अतिकिलिन्नत्तण्डुलादीनि

यह जो तुम समुद्र-पार आम, जामुन और कटहल बताता है, मुझे यह नहीं चाहिए। मेरे लिए गूलर ही अच्छा है। तुम्हारा शरीर बड़ा है; लेकिन तेरी प्रज्ञा उसके समान नहीं। मगरमच्छ! तुम मुझसे धोखा खा गये हो। अब तुम सुखपूर्वक जाओ।

अलमेतेहीति–जो तुमने द्वीप में देखे, वह मुझे नहीं चाहिए। **वरं मय्यं उदुम्बरोति**–मुझे यह उदुम्बर वृक्ष ही अच्छा है। **बोन्दि** शरीर। **तदूपिकाति**–तुम्हारी प्रज्ञा तुम्हारे शरीर के अनुकूल नहीं है। **गच्छदानि यथासुखंति**–अब सुखपूर्वक जाओ तुम्हारे (लिए) हृदय नहीं है।

मगरमच्छ (जुए में) सहस्र हारने वाले के समान दुःखी, दौर्मनस्य को प्राप्त हो, चिन्ता करता हुआ अपने निवास-स्थान को चला गया।

शास्ता ने यह धर्मदेशना कह जातक का परिणाम संघटित किया। उस समय मगरमच्छ देवदत्त था। मगरमच्छी चिञ्चामाणविका। कपिराज तो मैं ही था।

सुंसुमार जातक

●

२०९. कुक्कुट जातक

“दिट्ठा मया वने रुक्खाति–.....” यह (गाथा) शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय धर्मसेनापति सारिपुत्र के शिष्य तरुण भिक्षु के सम्बन्ध में कही।

क. वर्तमान कथा

वह अपने शरीर की रक्षा करने में सावधान रहता था। शरीर के लिए सुखकर न होगा, इस भय से किसी अति-शीत वा अति-उष्ण वस्तु का उपयोग न करता। सर्दी-गर्मी से शरीर को कष्ट होगा, इस भय से बाहर नहीं निकलता था। बहुत